Research Scholar- Kavita Sharma
Supervisor- Dr. Vivek Dubey

Department- Hindi

Title- MANOHAR SHYAM JOSHI KE UPANYASON MEIN CHITRIT PATRON KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN.)

Notification No.- 520/2022

Notification Date- 06-09-2022

## शोध–सार

हिन्दी औपन्यासिक साहित्य में मनोहर श्याम जोशी एकमात्र ऐसे लेखक हैं जो गंभीर तथा लोकप्रिय साहित्य दोनों तरह का लेखन एकसाथ करने में सिद्धहस्त रहे हैं। उनकी रुचि का दायरा बहुत बड़ा है। वे जितनी दिलचस्पी साहित्य लेखन में रखते हैं उतनी ही पत्रकारिता तथा सिनेमा के क्षेत्र में भी।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों के पात्रों के सन्दर्भ में निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सभी स्त्री–पुरुष पात्रों में काफी समानताएं है। जो मजबूती और आत्मविश्वास उनके स्त्री पात्रों में है वह तमाम प्रतिभाओं के बाद भी पुरुष पात्रों में देखने को नहीं मिलता। 'कसप' का नायक डी.डी., हो या क्याप उपन्यास में कथावाचक 'मैं' वधस्थल में 'अभिनव' कुरु कुरु स्वाहा... उपन्यास में लेखक जोशी आदि ऐसे ही पात्र हैं जिनके व्यक्तित्व में बहुत हद तक काफी समानताएं देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों के स्त्री पात्रों में भी काफी समानताएं हैं। 'कसप' उपन्यास में बेबी उनके सभी उपन्यासों के स्त्री पात्रों का गठजोड़ है। उसमें जहाँ एक ओर खिलन्दड़ापन है, मसखरी है, अपने स्तर का भावनात्मक खुलापन है, वहीं दूसरी ओर एक ख़ास किस्म की परिपक्वता है, बौद्धिकता और मजबूती है। कोई पक्ष ऐसा नहीं है जो इस पात्र से अछूता रहा हो। इसी तरह से उनके उपन्यासों के अन्य स्त्री पात्र भी इन्हीं सब खूबियों और तथाकथित खामियों के साथ रचे गए हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री एवम् पुरुष पात्र हिन्दी उपन्यासों के पारम्परिक पात्रों से भिन्न ही दिखाई पड़ते हैं। यही कारण है कि जितने वे अपने कथानक तथा भाषा को लेकर चर्चा में रहे उतने ही अपने उपन्यासों के पात्रों को लेकर भी। विशेष रूप में स्त्री पात्रों को लेकर अक्सर उनसे सवाल किए जाते रहे।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में कथ्य और शिल्प के स्तर पर भिन्न प्रयोग किए हैं। कथानक, पात्र तथा घटनाओं को वास्तविक तथा सहज रूप देने के लिए मनोहर श्याम जोशी किसी भी तरह की भाषा और तकनीक का प्रयोग करने से नहीं चूकते। पात्रों में तिमंजिले नायक की रचना कर नायक के भिन्न स्वरूप को भी उन्होंने पहले ही उपन्यास में दिखा दिया था।

नायक का यही स्वरूप उनके आगे के सभी उपन्यासों में थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ देखने को मिलता है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों का कथानक ग्रामीण से लेकर शहरी, देश से लेकर विदेश तक की संस्कृति के एक व्यापक दायरे को अपने में समेटता है। यह फैलाव ही पात्रों में अन्तर्द्वंद्व का कारण बनकर उभरता है। यह द्वंद्व इनके पात्रों में परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व के रूप में दिखाई देता है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों के पात्रों के सम्बन्ध में एक मुख्य बात यह है कि उनके पात्र सामाजिक स्तर पर गहराई से व्याप्त जेंडर की खाई का अतिरिक्त बोझ अपने पर नहीं लादते। उनके उपन्यासों के पात्रों में भावना के स्तर पर एक खुलापन है। यह खुलापन ही उनके पात्रों को हिन्दी उपन्यासों के पारम्परिक पात्रों से भिन्न बनाता है।

———————